उद्भावना

वर्ष : 38, अंक 159-160

सितंबर 2025

संपादक मंडल

अजेय कुमार (संपादक)

प्रियदर्शन, मुशर्रफ अली, विनीत तिवारी

सहयोग

रामपाल कटवालया

संपादकीय पता

एच-55, सेक्टर 23, राजनगर, गाजियाबाद

प्रबंधकीय पता

ए-21, झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095

मो. 9811582902 E-mail: pd.press@gmail.com

कैरीकेचर
निर्मिश ठाकर

मंगलेश : मनुष्यता पर इसरार

संपादक

अजेय कुमार

संपादन परामर्श व सहयोग

प्रमोद कौंसवाल, योगेन्द्र आहुजा, असद ज़ैदी, प्रियदर्शन, पंकज चतुर्वेदी

आवरण : **गणेश विसपुते**

मूल्य : 250 रुपये, डाक खर्च : 50 रुपये

कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकें (समाजवादी साहित्य)

Basawon Singh: A Revolutionary Patriot—*Gayatree Sharma (Ed.)* ₹2500
Collected Works of Dr. Rammanohar Lohia (9 Vols. Set)Mastram Kapoor (Ed.) ₹ 11000
Dr. Rammanohar Lohia: An Introduction *Mastram Kapoor* ₹ 600
Dr. Rammanohar Lohia: His Life and Philosophy *Indumati Kelkar* ₹ 800
Economics After Marx *Rammanohar Lohia* ₹ 300
Feudal Society *Marc Bloch* ₹ 1800
Founders of the Socialist Move-ment in India *Qurban Ali* ₹ 1995
Lohia's Quest For Civil Liberty: Court Cases & Judgements *Qurban Ali* ₹ 995
Remembering Dr. Lohia *Mastram Kapoor* ₹ 995
Salient Ideas of Rammanohar Lohia *B.K. Bhattacharya • Mastram Kapoor* ₹ 900
Socialism and Power *Sachchidanand Sinha* ₹ 700
Swami Sahajanand Saraswati *Raghav Sharan Sharma* ₹ 995
समाजवादी आंदोलन के दस्तावेज (2 खंडों में) *विनोद कुमार सिंह • सुनीलम् (सं.)* ₹1995
वे दिन वे लोग *के विक्रम राव* ₹ 600
तूफान तो आए कई, झुका न सके! *के. विक्रम राव* ₹ 695
लोकसभा में लोहिया (5 खंडों में) *मस्तराम कपूर (सं.)* ₹ 7500
राष्ट्रवाद, देशभक्ति और देशद्रोह *अरुण कु. त्रिपाठी • प्रदीप कु. सिंह • रामकिशोर (सं.)* ₹ 900
डॉ. राममनोहर लोहिया : वर्तमान संदर्भ में *मस्तराम कपूर* ₹ 495
द किंगमेकर : लालूप्रसाद यादव की अनकही दास्तान *जयंत जिज्ञासु* ₹ 995
जयप्रकाश की विचारधारा : समाजवाद से संपूर्ण क्रांति तक– *श्रीरामकृष्ण बेनीपुरी • महेन्द्र बेनीपुरी (सं.)* ₹ 995
जयप्रकाश की विचारधारा *श्रीरामकृष्ण बेनीपुरी • महेन्द्र बेनीपुरी (सं.)* ₹ 600
भारतीय समाजवादी आंदोलन का इतिहास : आशा और मोहभंग का काल–*अनिल कुमार ठाकुर* ₹ 450
समाजवादी चिंतन के अमर साधक : भूपेन्द्र नारायण मंडल *शरदेन्दु कुमार (सं.)* ₹ 700
जनांदोलन और स्वराज की अर्थनीति *आनंद कुमार* ₹ 450
शिक्षा स्वराज *आनंद कुमार* ₹ 350
समाजवाद की विरासत और राजनीति के सवाल *आनंद कुमार* ₹ 450
आज़ादी, लोकतंत्र और पड़ोसी मुल्क *आनंद कुमार* ₹ 350
समाजवाद : भारतीय जनता का संघर्ष *अयोध्या सिंह* ₹ 995
लोहिया संचयिता –*के. विक्रम राव •* *प्रदीप कुमार सिंह (सं.)* ₹ 1200
डॉ. राममनोहर लोहिया : जीवन और दर्शन *इंदुमति केलकर* ₹ 800
लोकतंत्र, आपातकाल और जयप्रकाश नारायण *विपिन चंद्र* ₹ 800
स्मरण-लोहिया *मस्तराम कपूर (सं.)* ₹ 995
समाजवाद की समस्याएं (चतुर्दिक शृंखला-1) *अरुण माहेश्वरी* ₹ 600
धर्म, समाज और संस्कृति (चतुर्दिक शृंखला-2) *अरुण माहेश्वरी* ₹ 700
समाजवाद, लोहिया और धर्मनिरपेक्षता *अरुण कुमार त्रिपाठी* ₹ 600
विकल्पहीनता का दर्द *मस्तराम कपूर* ₹ 900
रोजा लग्जमबर्ग : एक जीवनी *श्रीरामकृष्ण बेनीपुरी* ₹ 450
तिब्बत, हिमालय, भारत, चीन और डॉ. राममनोहर लोहिया *आनंद कुमार • मनोज कुमार (सं.)* ₹ 750
एक समाजवादी चिंतक के संस्मरण *नंद किशोर* ₹ 250
डॉ. राममनोहर लोहिया : आज के संदर्भ में *के. विक्रम राव* ₹ 200

अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड
4697/3, 21-ए, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002
दूरभाष : 011-23281655, 011-43708938
ई-मेल : anamikapublishers@yahoo.co.in

अनुक्रम

अपनी बात

मंगलेश के लिए - **अजेय कुमार** 7

खण्ड 1 : मंगलेश की याद

कोशिश करता हूँ कि क से क़लम या करुणा लिखूँ

अदनान काफिल दरवेश-13, असद ज़ैदी-14, नरेश सक्सेना-14,
लीलाधर मंडलोई-15, प्रियदर्शन-16, सुभाष राय-17, रामविलास सिंह-18
रूपम मिश्र-19, विनोद विठ्ठल-20, कुमार मुकुल-21, कुमार अम्बुज–24,
प्रफुल्ल शिलेदार-26, लीना मल्होत्रा-28, पंकज चतुर्वेदी-31

खण्ड 2 : संस्मरण

सरल होना साधारण होना नहीं है

मंगलेश की चिंताएँ और बेचैनियाँ - **रविभूषण** 34
कब याद में तेरा साथ नहीं - **मनोहर नायक** 44
मेरी यादों में मंगलेश : पांच दशक तक फैले
स्मृतियों के कैनवास से कुछ प्रसंग - **आनंद स्वरूप वर्मा** 64
मंगलेश स्मृति - **इब्बार रब्बी** 76
शिल्पमुक्त कविताओं का कवि - **नरेश सक्सेना** 86
वाम प्रतिज्ञा और 'नये मनुष्य की गंध' - **अजय सिंह** 92
बाँसुरी का जब सुनाई देता है विलाप - **विनोद भारद्वाज** 95
मुझसे मेरी नींद नहीं मेरे सपने लेना - **प्रमोद कौंसवाल** 101
वह ख़ामोशी जो वे छोड़ गए - **अल्मा डबराल** 113

खण्ड 3 : मंगलेश की कविता

आत्मा के दरवाजे से हम देखते हैं

मंगलेश डबराल - **अशोक वाजपेयी** 119
पहाड़ पर लालटेन के आत्मीय उजाले का वह वृत्त - **विजय कुमार** 125
एक 'खामोश' कवि - **योगेंद्र आहूजा** 131
स्मृति के दूसरे समय में जीवन की एक आवाज़ - **शिवप्रसाद जोशी** 138

'अब वो रानाई-ए खयाल कहाँ'
मंगलेश डबराल के लिए कुछ पंक्तियाँ – **असद ज़ैदी** 149
मंगलेश डबराल का असंभव घर
(एक असमाप्त लेख) – **रवीन्द्र त्रिपाठी** 161
उजाले में आग की तलाश – **मदन कश्यप** 166
धवल मनुष्यता का कवि – **प्रियदर्शन** 170
एक चलते-फिरते सोचते गाते कवि का
बेशकीमती सान्निध्य – **सुंदर चंद ठाकुर** 174
ऐसा कवि, जो भुलाए न बने – **विष्णु नागर** 198
अमूर्त समय में मनुष्य की पहचान – **हेमंत कुकरेती** 204
वह भारतीय कविता का विश्वसनीय चेहरा थे – **प्रफुल्ल शिलेदार** 209
अपने तरीके से लड़ते आदमी की शक्ल – **संजय कुंदन** 216
मंगलेश डबराल की कविता : कुछ नोट्स – **बसंत त्रिपाठी** 221
मंगलेश डबराल की यादों में पहाड़! – **हरिमृदुल** 228
धीमे प्रकाश में गूँजता हुआ मारवा – **गणेश विसपुते** 226
वक़्त की पीर बखानती कविताएँ – **लाल्टू** 243
नींद मुझे दो एक ठीक-ठाक स्वप्न – **राकेशरेणु** 247
भूख से कलपते गाज़ा के बच्चों की यातना से जुड़ती
मंगलेश डबराल की कविता – **भाषा सिंह** 253
पत्थर के बीच बहती पानी जैसी एक आवाज़ – **शंकरानंद** 261

खण्ड 4 : चयनित कविताएँ

मैं तुम्हें सौंपता हूँ यह कविता

पहाड़ पर लालटेन-269, शहर-1-270, पैरों के पीछे-270, अत्याचारियों की थकान-271, तानाशाह कहता है-272, एक जीवन के लिए-273, प्रेम करती स्त्री-273, पैदल बच्चे स्कूल-274, सफल कवि-275, क्या काम-276, दिनचर्या-277, बाहर-277, कुछ देर के लिए-278, गुमशुदा-279, पिता की तस्वीर-280, अपनी तस्वीर-280, बच्चों के लिए चिट्ठी-281, तीन घटनाएँ-281, प्रायोजित व्यापार-282, ऐसा समय-283, संगतकार-283, छुपम छुपाई-284, पागलों का एक वर्णन-285, ब्रेश्ट और निराला-287, नये युग में शत्रु-288, यह नंबर मौजूद नहीं-289, बची हुई जगहें-290, यथार्थ इन दिनों-290, गुजरात के मृतक का बयान-292, ताक़त की दुनिया-293, गुलामी-294, वर्णमाला-295, भूलने का युग-295, एक लोकगीत सुनकर-296, ताक़तवर आदमी-297, मेरा दिल-298, आसान शिकार-300, स्त्रियाँ-301

खण्ड 5 : कवि का गद्य

यथार्थ इन दिनों बहुत ज़्यादा यथार्थ है

सोचता हुआ गद्य, जिसमें मंगलेशियत बसी है – **चंद्रभूषण** 305

मंगलेश के कुछ महत्वपूर्ण लेख व गद्यांश

घर छोड़कर जाने वाले लौट क्यों नहीं पाते 310
यह अपनी ज़बान है– 314
के. सच्चिदानन्दन की गांधी पर कविताएँ 321
कविता का अन्त:संघर्ष 322
क्या आज भ्रष्टाचार एक मानवीय मूल्य है ? 323
ये कैसा वक्त है ? 323
संस्कृति, अपसंस्कृति, विकृति 324
सिर्फ़ यही थी मेरी उम्मीद 326
वीरेन डंगवाल : मानी पैदा करता जीवन 328

खण्ड 6 : अनुवाद

कविता जहाँ भी जाती है उसका पुनर्जन्म होता है
यानि कि दुनिया (मंगलेश डबराल की अनूदित आवाज़ें) – **सॉनेट मंडल** 333

अनूदित कविताएँ

एर्नेस्टो कार्देनल–336, तादेउश रूजेविच–339, लुइस ग्लिक –340, ओजिब्वा (चिप्पेवा)–342, नाज़िम हिकमत–342, वोसेंते आलेइक्सांद्रे –344, यानिस रित्सोस –344, ओतो रेनो कास्तिलो–345, फ़िलिप निकोलायेव–346, नजवान दरविश–347

खण्ड 7 : संगीत, सिनेमा और कथेतर गद्य

वह था एक सच्चा कवि जो रंगों को सुन सकता था
संगीत को देख सकता था

न बन सके सिनेमा की याद – **संजय जोशी** 351
संजय काक की फिल्म 'जश्ने आज़ादी' – **मंगलेश डबराल** 355
कविता का सिनेमा और ऋत्विक घटक, चार्ली चैप्लिन 358
स्मृति का संगीत – **मंगलेश डबराल** 364
कवि का यात्रा लेखा – **पल्लव** 374
मंगलेश : एक सड़क की जगह – **लीलाधर मंडलोई** 381

आभार

इस अंक में छपे अधिकतर फोटोग्राफ़्स मराठी के जाने–माने लेखक व अनुवादक प्रो. बलवंत जेऊरकर और मंगलेश जी की बेटी अल्मा डबराल के सौजन्य से प्राप्त हुए हैं। उनका आभार। अन्य मित्रों ने भी कुछ फोटोग्राफ़्स उपलब्ध कराए, उनका भी आभार। इस अंक के सात खण्डों के लिए सेप्रेटर्स का डिजाइन मशहूर चित्रकार व लेखक श्री गणेश विसपुते ने किया है, उनका बहुत बहुत धन्यवाद।

कृपया ध्यान दें

सभी चैक/ड्राफ्ट

'**UDBHAVANA**' के नाम से पत्राचार के पते पर ही भेजें.

जो पाठक हमारे अकाउंट में ऑन लाइन जमा करना चाहते हैं, वे कृपया निम्न सूचना देखें

अकाउंट : UDBHAVANA
अकाउंट न. : 90261010002100
बैंक : Canara Bank
ब्रांच : राजेंद्र नगर, नई दिल्ली-110060
IFSC : CNRB0019026

आजीवन सदस्यों को अब तक छपे सभी उपलब्ध महत्त्वपूर्ण विशेषांक भेंट स्वरूप दिए जाएंगे

पत्रिका में छपे विचार लेखकों/लेखिकाओं के अपने हैं, उनसे संपादकीय सहमति होना अनिवार्य नहीं है।

संदर्भ

1. सिर्फ़ यही थी मेरी उम्मीद, मंगलेश डबराल, वाणी प्रकाशन
2. कवि का अकेलापन, मंगलेश डबराल, राधाकृष्ण प्रकाशन
3. कविता वीरेन, नवारुण
4. मंगलेश डबराल सेतु समग्र : कविता, सेतु प्रकाशन
5. लेखक की रोटी, मंगलेश डबराल, आधार प्रकाशन
6. मंगलेश के तमाम कविता संग्रह, राजकमल प्रकाशन

अपनी बात

मंगलेश के लिए

मैं यह बात यक़ीन के साथ कह सकता हूँ कि केवल मेरे साथ ही नहीं कई मित्रों के साथ भी यह होता होगा कि जब जब भी मंगलेश का नाम ज़बान पर आता है, उनकी कविता 'गुजरात के मृतक का बयान' भी पीछे पीछे चली आती है। मेरा यह मानना है कि इस देश के इतिहास में जब जब भी गुजरात 2002 का ज़िक्र होगा, इस कविता को याद किया जाएगा। यह कविता दरअसल मंगलेश के अपने दर्शन को और देश के वर्तमान की वीभत्सता को दिखलाने में पूर्णतया सफल है। इस अंक के कई रचनाकारों ने इस कविता की अपने–अपने ढंग से व्याख्या की है। लेकिन इस कविता को सिर्फ गुजरात की विभीषिका तक केंद्रित रखेंगे तो उन संकेतों को अनदेखा कर देंगे जो मंगलेश की काव्यात्मक बुनावट और उसके महत्व को समझने में खासे मददगार हो सकते हैं। यह कविता जितनी राजनीतिक है, उससे कहीं ज़्यादा मानवीय। यह कविता सांप्रदायिकता की भयावहता को बिल्कुल एक चेहरा दे देती है जिससे हमारे भीतर कुछ टूटता–फूटता लगता है तो दूसरी तरफ यह भी याद दिलाती है कि बंदगी का कोई जवाब नहीं आता। धार्मिक प्रतीकों की असहायता पर क्या ऐसी सूक्ष्मता से प्रहार कहीं और याद आता है?

दरअसल मंगलेश डबराल बड़े कवि इसीलिए हैं कि उनकी निगाह उस वृहत्तर यथार्थ को देख लेती है जिसमें मनुष्यता का मर्म भी शामिल है और उस पर हो रहे हमले भी, उनका पश्चाताप भी शामिल है और बहुत मद्धिम लय में वह सांस्कृतिक प्रतिरोध भी जो अपने मामूलीपन में ही भव्य हो उठता है। संगीत हो, सिनेमा हो, स्मृति हो, छूटा हुआ पहाड़ हो, संबंध हों, नई यातनाओं की जमीन बनाता मैदान हो, मायावी बाज़ार हो– बहुत शुरू से मंगलेश डबराल अपनी

कविताओं में एक विराट वृत्त बनाते हैं जिसमें ध्यान से देखें तो एक पूरा सभ्यता विमर्श पढ़ा जा सकता है। गुजरात पर कविताओं के अतिरिक्त उनकी अनेक कविताएँ चर्चा में रहीं। मैंने जब इस अंक के लिए कविताओं का चयन करना शुरू किया तो मुझे बड़े भारी मन से कई कविताओं को छोड़ना पड़ा। पृष्ठों की सीमा न होती तो कुछ और कविताओं को इस चयन में शामिल करता।

जब मेरी यह राय बनी कि मंगलेश पर एक विशेषांक निकलना चाहिए, तब मैंने यह मान लिया था कि मंगलेश के देहांत को 5 वर्ष होने को हैं, अब मंगलेश के मित्र–दुश्मन शांत हो गए होंगे और मुझे ज़्यादा दिक़्क़तों का सामना नहीं करना पड़ेगा। यह मेरी नादानी थी जिसके कारण मैं बहुत देर में समझ पाया कि कई कवि और आलोचक मंगलेश पर लिखने से क्यों हिचकिचा रहे हैं। मैं यह दावा नहीं कर सकता कि आज भी इस दुष्चक्र की तह तक पहुंच पाया हूँ।

इस अंक में देरी के कई कारण रहे। मेरा अस्वस्थ होना और लगभग एक माह तक कुछ न कर पाना केवल एक कारण था। दूसरा मुख्य कारण था कई मित्रों में मंगलेश पर लिखने के लिए एक मानसिक तैयारी की कमी। जिन पर मुझे यकीन था कि वे तो फौरन लिख देंगे क्योंकि जीते जी वे मंगलेश के बहुत करीब थे, उन्हीं ने अपनी रचनाएं बड़े विलम्ब से दीं। वो कहते हैं न कि 'मेरी कश्ती वहां डूबी जहां पानी बहुत कम था।' ये तमाम टालू–मंडली के मेम्बरान कोई न कोई बहाना बना कर लिखना टालते रहे। एक मित्र ने तो गालिब का शे'र उद्धृत करते हुए मुक्त होना चाहा :

गालिबे ख़स्ता के बग़ैर कौन से काम बंद हैं
रोइए ज़ार ज़ार क्या कीजिए हाय हाय क्यों

मंगलेश से उनकी दोस्ती का हवाला बार बार देना पड़ा और मेरा धैर्य व उत्साह रंग लाया। मुझे उन सबका भरपूर सहयोग मिलने लगा। मैं तहेदिल से उनका शुक्र गुज़ार हूँ। बहुत ही संकोच के साथ, यहाँ यह दर्ज करना चाहता हूं कि मेरे कई बार तकाज़ा करने के बावजूद श्री ज्ञानरंजन, देवीप्रसाद मिश्र और आशुतोष कुमार ने इस अंक के लिए कुछ नहीं लिखा। ये वे लोग हैं जिनके बारे में मंगलेश अक़्सर बात किया करते थे। इसका मुझे ताउम्र अफसोस रहेगा। श्री आनंदस्वरूप वर्मा ने, तमाम बीमारियों को झेलते हुए, मंगलेश पर लिखने की अहमियत को समझा और अपने संस्मरण भेजे, मैं उनका आभारी रहूंगा।

हमारे देश में हज़ारों की संख्या में लघु–पत्रिकाएं छप रही हैं। पिछले 5 वर्षों में किसी पत्रिका ने मंगलेश पर विशेषांक तो दूर, शायद एक खंड भी देना ज़रूरी नहीं समझा, यह मेरे लिए बड़े आश्चर्य की बात है। मंगलेश पर 'पहाड़वाद' को बढ़ावा देने का इल्ज़ाम लगता रहा है परन्तु पहाड़ से निकलने वाली पत्रिकाओं ने भी चुप्पी साध ली। रविभूषण जी ने ज़रूर एक प्रयास किया था जो कि सफल नहीं हो सका। खैर!

पत्रिका में देरी का एक और कारण मेरी मंगलेश के लेखन के तमाम पक्षों को समेटने